RNI/MPHIN/2013/61414

UGC Care Listed

ISSN 2278-0327
Peer Reviewed
Refereed Journal

ज्योतिर्वेद - प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ् मय की शोधपत्रिका - संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

दशम वर्ष, चतुर्थ अंक

सितम्बर-अक्टूबर 2021

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

भारतीय ज्योतिषम्

₹ 30

विषय-सूची

क्र.	लेख विषय	लेखक	पृ.सं.
1.	धर्मो हि परमो लोके धर्मे सत्यं प्रतिष्ठितम्	डॉ. जी.एल. पाटीदार, विनोद कुमार पाटीदार	05
2.	भगवद्गीता के माध्यम से वैश्विक समस्याओं का निराकरण	डॉ. तनुजा रावल	10
3.	पाणिनीय तन्त्र में भाषावैज्ञानिक तत्त्व	ज्योति	15
4.	उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में स्वास्थ्य आदतों का अध्ययन	डॉ. सुनील कुमार सेन, अश्वनी कुमार मिश्र	20
5.	ग्रामीण छात्राओं की मंथली पीरियड के दौरान शारीरिक एवं शैक्षणिक समस्याएँ एवं अधिगम व्यूह रचना	सुजीत कुमार श्रद्धा मिश्रा	28
6.	गतिविच्छेद प्राणायाम	मनोरमा	37
7.	दशकण्ठवधम् में औचित्य विमर्श	डॉ. संध्या मिश्रा	40
8.	महर्षि पतंजलि कृत योग दर्शन में वर्णित अभ्यास – वैराग्य के माध्यम द्वारा चित्तवृत्ति का निरोध	सुनील कुमार शर्मा	42
9.	शैलेश मटियानी के कथा–साहित्य में वर्णित मानव जीवन का आर्थिक परिप्रेक्ष्य	कृष्णा अवतार	46
10.	शब्दानुशासन में शब्दब्रह्ममीमांसा	डॉ. लेखराम दन्नाना	49
11.	धम्मपद में वर्णित सदाचार (शील)	डॉ. अनीता सोनकर	52
12.	संस्कृत व्याकरण परम्परा के दार्शनिक आचार्य	डॉ. मालती राघव	55
13.	आधुनिक ज्ञानमीमांसा के लिए न्याय के दर्शन की प्रासंगिकता	डॉ. सोमनाथ दास	58
14.	आधुनिक परिप्रेक्ष्य में रामायण के औषधीय पौधे : एक अन्वेषण	श्री अनिर्वाण चक्रवर्ती	61
15.	उपनिषदों की रोशनी में रवीन्द्रनाथ का श्रेय और प्रेय	डॉ. नासिरुद्दिन मन्डल	64
16.	पिप्पली के औषधीय उपयोग : सुश्रुत संहिता के अनुसार	अर्पिता चक्रवर्ती	69
17.	संस्कृत नैतिक कहानियां साहित्य में हास्य का स्रोत हैं	जुविन इयासमिन	73
18.	शंकर मिश्र का 'व्यक्तित्व' विमर्श	ओम प्रकाश झा	78
19.	रहीम का नैतिकता–बोध	डॉ. हेमवती शर्मा	84
20.	शैक्षिक उन्नयन में व्यवहारिक पक्ष : अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता	अखिलेश यादव	87
21.	वेद एवं धर्मशास्त्र में संवेदनशील समाज	रंजेश्वर झा	91
22.	राष्ट्रीय उद्बोधन व जन–जागरण के अग्रदूत : बाबू भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	डॉ. गिरीश चन्द्र जोशी	94
23.	यास्कीय निरुक्त में वर्णित अनुबन्ध–चतुष्टय	संदीप	98
24.	'लहरों के राजहंस' – मिथ और यथार्थ	डॉ. अर्चना गौड़	103
25.	भारतेंदुकृत 'भारतदुर्दशा' में सामाजिक चेतना व सम–सामयिकता	डॉ. संजय कुमार, डॉ गिरीश चंद्र जोशी	111
26.	पुरातन कर्मों की कारणता : एक दार्शनिक दृष्टि	डॉ. बबीता शर्मा	115
27.	संस्कृत वाङ्मय में श्रीराधा : एक विमर्श	डॉ. राजेश सिंह	118
28.	वैदिक वाङ्मय में मानव एवं प्रकृति का अन्त:सम्बन्ध	डॉ. रजनीश	123
29.	न्याय दर्शन का ज्ञान मीमांसीय परिप्रेक्ष्य	डॉ. विनोद कुमार	126
30.	21वीं सदी में हिन्दी भाषा	डॉ. अखिलेश कुमार	133
31.	जन–जन की भाषा है हिंदी	डॉ. एच.ए. हुनगुंद	137
32.	नागार्जुन की 'हरिजन गाथा': भविष्यगर्भित क्रांति की परिकल्पना	डॉ. अनिशा	140
33.	कबीर के काव्य की प्रासंगिकता और दूरदर्शिता आज के संदर्भ में (एक विश्लेषण)	डॉ. सुरेश कुमार बैरागी	143
34.	वाल्मीकि रामायण में विभीषण : राक्षस कुल में धर्मात्मा	डॉ. अनुराग कुमार पाण्डेय	146
35.	महर्षि दयानन्द सरस्वती व महर्षि अरविन्द के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन तथा नई शिक्षा नीति 2020 में उनके विचारों की प्रासंगिकता	लता शर्मा डॉ. अनीता सिंह	150
36.	मानवतावादी दर्शन और उसकी वर्तमान में प्रासंगिकता	हेमेन्द्र कुमार गंगवार	154

37. माध्यमिक स्तर पर कार्यरत अध्यापकों का समावेशी शिक्षा से संबंधित ज्ञान का अध्ययन	नगनारायण उपाध्याय, प्रो. सुनीता गोदियाल	160
38. शिक्षक प्रशिक्षुओं का तकनीकी के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन	प्रेरणा सेमवाल	165
39. मानसिक स्वास्थ्य विषयक चिन्तन में श्रीमद्भगवद्गीता की उपादेयता	सोमवीर	171
40. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के तनाव का उनके सामाजिक समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन	सीमा सिंह, डॉ. अनामिका श्रीवास्तव	174
41. ग्रामीण महिलाओं पर विज्ञापनों का प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण	डॉ. सीमा यादव	178
42. सोनभद्र जिला, उत्तर प्रदेश के गोंड जनजाति का सामाजिक-आर्थिक संरचना : परिवर्तन व निरन्तरता	डॉ. पियुष कुमार सिंह	181
43. कर्मफल : ज्योतिष शास्त्र एवं सप्त चक्रों की उपादेयता	डॉ के. बालराजु	184
44. भारतीय भाषाओं के विकास में संत कवियों का योगदान	डॉ. संदीपा कालभोर	188
45. ज्योतिषशास्त्र में व्यवसाय-विचार	डॉ. रमेश शर्मा	190
46. समग्र व्यक्तित्व के विकास में शरीर और मन की भूमिका	पूनम पचौरी	194
47. चौधरी देवीलाल : एक सच्चा जननायक	डॉ. सुनील देवी खरब	197
48. संचार एवं पत्रकारिता में हिंदी का महत्व	रसना सहरावत, स्मृति मल्होत्रा	200
49. भारतीय भाषाएं तथा भारतीय मूल्य	डॉ. प्रियंका सिंह निरंजन, डॉ. अंशु माथुर, डॉ. जिप्सी मल्होत्रा	203
50. दुष्यन्त कुमार की कहानियों में सामाजिक सरोकार व जीवन मूल्य	डॉ. उमाकांत	207
51. मानव जीवन शैली में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी : एक विश्लेषण	डॉ. वासु चौधरी, डॉ. गीता साहु	214
52. पाणिनीय माध्यम से हिन्दी भाषा की उन्नति	डॉ संजीवनी आर्या	218
53. ऑनलाइन माध्यम से संगीत का शिक्षण: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	द्विजेश उपाध्याय, डॉ. संध्या रानी शाक्य	222
54. पूर्वी भारत में आधुनिक संस्कृत के अभ्यास : बिहार, झारखंड, असम और बंगाल के संदर्भ में	राजू कर	234
55. वैश्वीकरण के दौर में निम्न वर्ग	शिवांगी पाण्डेय	238
56. साहित्यकार मुंशी प्रेमचन्द की रचनाओं में नारी विमर्श	सन्दीप कुमार	241
57. मार्क्सवादी विचारधारा के सैद्धान्तिक आधार व वर्तमान में इसकी प्रासंगिकता	महेश जगोठा	245
58. ईश्वर का वाचक प्रणव: एक विवेचन	अंग्रेज	254
59. हिन्दी साहित्य में कृषक जनजीवन का चित्रण	अंजली यादव	257
60. वेदों में पर्यावरणीय चिन्तन	कान्ताप्रसाद	262
61. महात्मा गांधी के अस्पृश्यता निवारण सम्बन्धी विचारों की प्रासंगिकता	कमल किशोर कण्डावरिया	266
62. पातञ्जल योग दर्शन में यम की दार्शनिक मीमांसा	खुशबू कुमारी	270
63. शारीरिक एवं मानसिक विकारों के ज्योतिषीय उपचार में 'पर्यावरण संरक्षण' का अध्ययन	प्रकाश चन्द्र शर्मा, प्रो. सरस्वती काला, डॉ. विनोद कुमार शर्मा	274
64. आचार्य कौटिल्यसम्मत सामाजिक व्यवस्था की प्रासंगिकता	सोनिया शर्मा	277
65. वैवाहिक जीवन को सुख-समृद्धि बनाने में ज्यौतिष शास्त्र की भूमिका	राहुल सती	280
66. कारपोरेट क्षेत्र में बढ़ते तनाव पर यौगिक उपचार के प्रभाव का समीक्षात्मक अध्ययन	रवि दूबे, डॉ. मनोज कुमार टाक	283
67. शक्तिभद्रकृत आश्चर्यचूडामणि में राजधर्म	डॉ. रघुनाथ प्रसाद	285
68. भास के नाटकों में यौगन्धरायण	डॉ. कुमारी सोनी मद्धेशिया	287
69. मधुकांत के 'नया सवेरा' उपन्यास में एड्स के प्रति जागरूकता	ओमवीर	289
70. उपनिषद्कालीन नारी	मीनाक्षी	292
71. प्रत्यक्ष प्रमाण : न्याय और जैन एक तुलना	संगीता बिपिन शाह, प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञाजी	294
72. देवालयों में विभिन्न देवताओं के स्थापन हेतु समुचित स्थानों का निर्धारण	भावेश शाह, प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी	300
73. बुन्देलखण्ड के कवि : जन चेतना का संदर्भ	अजय कुमार सिंह	304

ISSN 2278 - 0327

ऑनलाइन माध्यम से संगीत का शिक्षण: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

(भारतीय शास्त्रीय संगीत शिक्षण के विशेष सन्दर्भ में)

द्विजेश उपाध्याय
शोध छात्र–संगीत,
रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश

डॉ. संध्या रानी शाक्य
प्रोफेसर
क्षेत्रीय उच्च षिक्षा अधिकारी–बरेली मंडल, बरेली, उत्तर प्रदेश

सार – कम्प्यूटर तथा सूचना प्रौद्योगिकी समाज के हर वर्ग, क्षेत्र व पहलू को प्रभावित कर रही है और मनुष्य के जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में इसके कारण नाटकीय परिवर्तन दृष्टिगत हो रहे हैं। शिक्षा प्रदान करने के क्षेत्र या कहें कि शिक्षण प्रणाली दोनों में ही प्रौद्योगिकी के कारण विशेष परिवर्तन स्पष्ट देखने में आ रहा है। मुक्त व दूरस्थ शिक्षा प्रणाली ने अपने शिक्षा प्रदान करने के माध्यमों, विशेषकर प्रौद्योगिकी संबंधी द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन ला दिया है। वर्तमान में इंटरनेट या वेब आधारित सम्प्रेषण व तकनीकी माध्यम अध्ययन–अध्यापन हेतु प्रचलित माध्यम के रूप में प्रयोग किया जा रहा है।

वर्तमान में इंटरनेट की व्यापकता और प्रौद्योगिकी की उपलब्धता से ऑनलाइन या ई माध्यम से अध्ययन एवं अध्यापन की मांग में निरन्तर वृद्धि परिलक्षित हो रही है। ऑनलाइन शिक्षा पूरी तरह से इंटरनेट पर आधारित शिक्षा है। इसकी यही विशेषता के कारण सम्पूर्ण विश्व में कोविड–19 महामारी के चलते उत्पन्न हुई गंभीर परिस्थितियां के पश्चात् भी ऑनलाइन माध्यम, मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण प्रणाली के महत्वपूर्ण घटक के रूप में उभरा है और अध्ययन एवं अध्यापन को गतिमान भी रखा।

भारतीय शास्त्रीय संगीत की परम्परा बहुत प्राचीन है। इसके अध्ययन एवं अध्यापन हेतु उपलब्ध एवं स्थापित सभी शिक्षण प्रणालियों में से गुरू–शिष्य प्रणाली को श्रेष्ठ माना जाता रहा है क्योंकि यह गुरूमुखी विद्या है। किन्तु प्रत्येक शिक्षण प्रणाली अपनी प्रकृति एवं सीमाओं के कारण संगीत शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक सभी विद्यार्थियों को शिक्षा देने में असमर्थ है। ऐसे में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण प्रणाली एक नई किरण के रूप में उभरी, किन्तु वर्तमान में तो भारतीय शास्त्रीय संगीत शिक्षण के क्षेत्र में ऑनलाइन शिक्षा बहुत प्रभावी एवं लोकप्रिय हो रही है।

प्रस्तुत शोधपत्र के द्वारा ऑनलाइन माध्यम से संगीत शिक्षण का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। ऑनलाइन माध्यम से भारतीय शास्त्रीय संगीत के शिक्षण से संबंधित संभावनाओं व चुनौतियों का अध्ययन व इसमें उत्पन्न होने वाली समस्याओं का समीक्षात्मक विश्लेषण द्वितीयक आंकड़ों के माध्यम से किया गया है। साथ ही इन समस्याओं से सम्बन्धित संभावित समाधान भी सुझाए गए हैं।

मुख्य शब्द – मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण प्रणाली, गुरू–शिष्य प्रणाली, ऑनलाइन शिक्षा।

प्रस्तावना:–

विगत कुछ वर्षों से अध्ययन–अध्यापन की प्रक्रिया में एक बड़ा और विशेष परिवर्तन परिलक्षित हो रहा है, जिसका मुख्य कारण कम्प्यूटर तथा इंटरनेट जैसी प्रौद्योगिकी का अधिक प्रयोग माना जा रहा है। कम्प्यूटर तथा सूचना प्रौद्योगिकी समाज के हर वर्ग, क्षेत्र व पहलू को प्रभावित कर रही है और मनुष्य के जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में इसके कारण नाटकीय परिवर्तन देखने को मिल रहा हैं। शिक्षा प्रदान करने के क्षेत्र, या कहें कि शिक्षण प्रणाली में भी प्रौद्योगिकी के कारण विशेष परिवर्तन स्पष्ट देखने में आ रहा है।

मुक्त व दूरस्थ शिक्षा प्रणाली ने अपने शिक्षा प्रदान करने के माध्यमों, विशेषकर प्रौद्योगिकी संबंधी द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन ला दिया है। शिक्षाविद् मानते हैं कि सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग एवं निरन्तर विकास के फलस्वरूप मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली अत्यन्त विकसित हुई है तथा इसके प्रति व्यक्तियों का विश्वास एवं रुझान पूर्व की अपेक्षा बहुत बढ़ा है। वर्तमान में इंटरनेट, प्री–रिकॉर्डेड प्रोग्राम आदि जैसे विभिन्न प्रकार के सम्प्रेषण व तकनीकी माध्यम भी मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में प्रयोग किए जा रहे हैं।

अब ऑनलाईन शिक्षा, ई–शिक्षा, वर्चुअल क्लासरूम भी मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के एक रूप में प्रयोग किए जाने लगे हैं। शिक्षा प्रदान करने के विभिन्न माध्यमों में से प्रौद्योगिकी आधारित

माध्यम है ऑनलाइन विधि, जो वर्तमान में एक शक्तिशाली एवं प्रभावशाली दावेदार के रूप में उभरा है। 'हाल के एक वैश्विक स्तर के ऑनलाइन शिक्षण कार्यक्रम अध्ययन के अनुसार, संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद, भारत ऑनलाइन पाठ्यक्रम नामांकन में दूसरा सबसे बड़ी संख्या वाला देश है जहां 1,55,000 से अधिक छात्र ऑनलाइन पाठ्यक्रम में नामांकित हैं। दुनिया भर में कुल 1.2 मिलियन छात्रों में से, 32% यू.एस. से हैं जबकि 15% भारत से हैं।'[1]

वर्तमान में तो शिक्षक और विद्यार्थी मुख्यत: ऑनलाईन (इंटरनेट) माध्यम द्वारा परस्पर सम्पर्क स्थापित कर अध्ययन-अध्यापन कर रहे हैं तथा ऐसा प्रतीत हो रहा है कि यह कक्षा शिक्षण की जगह लेती जा रही है। कुछ शिक्षाविद् दृढ़ता से यह मानते हैं और तर्क देते है कि कक्षा शिक्षण का स्थान प्रौद्योगिकी कभी भी नहीं ले सकती। ऑनलाइन शिक्षण विशेष परिस्थितियों में एवं एक सहयोगी टूल के रूप में प्रयोग किया जा सकता है जिससे विद्यार्थी इससे लाभान्वित हो सकें।

भारतीय शास्त्रीय संगीत शास्त्र आधारित होता है तथा जिसका शास्त्र निश्चित है। इसकी परम्परा बहुत प्राचीन है तथा इसे गुरूमुखी विद्या कहा जाता है। भारतीय शास्त्रीय संगीत के अध्ययन-अध्यापन हेतु प्रचलित सभी प्रणालियों में से गुरू-शिष्य प्रणाली सर्वोत्तम मानी जाती है। इस पद्धति का प्रयोग प्राचीनकाल से ही देखने को मिलता है। इसका प्रणाली का मुख्य उद्देश्य है- गुरू द्वारा, प्राप्त तथा निरन्तर अभ्यास द्वारा आत्मसात एवं सिद्ध किए ज्ञान को अपने योग्य शिष्यों को पारम्परिक रूप से हस्तान्तरित करना और शिष्य द्वारा भी इसी परम्परा का निर्वहन करते हुए ज्ञान को आगे की पीढ़ी को प्रदान करना। वर्तमान में इसके स्वरूप में कुछ परिवर्तन देखने को मिला है किन्तु इसका मूल अपरिवर्तित ही है।

गुरू-शिष्य प्रणाली में शिक्षण मुख्यत: व्यक्तिगत रूप में होता है। इसके अन्तर्गत शिष्य, भारतीय शास्त्रीय संगीत के विभिन्न पहलुओं से सम्बन्धित गूढ़ रहस्यों, उनके सूक्ष्मतम रूपों, विभिन्न रचनाओं आदि का ज्ञान गुरू के सानिध्य में पूर्ण अनुशासन में रहकर एवं कठोर साधना कर प्राप्त करता है। उच्च कोटि का संगीत कलाकार निर्माण हेतु यह प्रणाली, अपनी विशेषताओं के कारण सबसे अनुकूल मानी जाती है। किन्तु अन्य प्रणालियों की भांति इस प्रणाली की भी अपनी कुछ सीमाएं हैं जिस कारण इच्छुक प्रत्येक विद्यार्थी के लिए इस प्रणाली के माध्यम से भारतीय शास्त्रीय संगीत का ज्ञान प्राप्त करना संभव प्रतीत नहीं होता। ऐसे में वर्तमान में ऑनलाइन माध्यम अपनी विशेषताओं के कारण भारतीय शास्त्रीय संगीत का ज्ञान प्राप्त करने का एक बेहतरीन विकल्प प्रस्तुत करता है जिसमें सूचना प्रौद्योगिकी की उन्नत उपकरण व तकनीक तो हैं ही साथ में पारम्परिक प्रणाली के गुण भी सम्मिलित दिखते हैं।

साहित्य समीक्षाः-

सूद एवं सिंह (2014) ने अपने शोध में भारतीय छात्रों (मुख्यत: उत्तर भारत में उच्च शिक्षा में तकनीकी पाठ्यक्रमों के छात्र) के बीच ऑनलाईन शिक्षा के प्रयोग एवं उनकी प्रतिक्रिया पर चर्चा एवं विश्लेषण प्रस्तुत किया है। बैनर्जी (2015) का कार्य ऑनलाईन/ई माध्यम से संगीत सिखाने की संभावनाओं पर केन्द्रित है। लेखक ने संगीत शिक्षा में ऑनलाईन/ई पाठ्यक्रमों के कार्यान्वयन से संबंधित चुनौतियों को भी रेखांकित करने का प्रयास किया है। सन एवं चेन (2016) के शोध के अनुसार प्रभावशाली ऑनलाईन शिक्षा के लिए उच्च कोटि की पाठ्यक्रम सामग्री का निर्माण, शिक्षक एवं विद्यार्थी के मध्य प्रेरक संवाद होना चाहिए, पूर्णरूपेण प्रशिक्षित एवं समर्पित शिक्षक/प्रशिक्षक होना चाहिए, शिक्षण समुदाय को ऑनलाइन संबंधित समझ का निर्माण एवं प्रौद्योगिकी की तेजी से होना आवश्यक है। उनका कहना है कि ऑनलाईन शिक्षा का विकास होना तो निश्चित ही है साथ ही ऑनलाईन माध्यम से अध्ययन-अध्यापन की प्रभावशीलता, प्रभावकारिता इसमें सुधार हेतु शोध किया जाना चाहिए। लोन (2017) का शोध कार्य भारतीयों में ऑनलाइन शिक्षा के प्रभाव पर केन्द्रित है। शोधार्थी द्वारा भारत में ऑनलाईन लर्निंग की वर्तमान स्थिति, ग्रामीण भारत और डिजिटल शिक्षा एवं ऑनलाईन शिक्षा संबंधी चुनौतियों को रेखांकित करने का प्रयास किया है। धवन (2020) ने अपने शोध में ऑनलाइन शिक्षा की ताकत, कमजोरियों, अवसरों, और विषम परिस्थिति में इसका विश्लेषण प्रस्तुत किया हैं। इसके साथ ही ऑनलाइन शिक्षण से जुड़ी चुनौतियों से निपटने के लिए शैक्षणिक संस्थानों के सुझाव भी रेखांकित किए हैं। यह महामारी व प्राकृतिक आपदा के समय में ऑनलाइन माध्यम की भूमिका पर केन्द्रित है।

शोध पत्र के उद्देश्यः-

प्रस्तुत शोध पत्र के उद्देश्य निम्न हैं :

1) ऑनलाइन शिक्षण माध्यम की अवधारणा को समझना।

2) भारतीय शास्त्रीय संगीत के शिक्षण में ऑनलाइन माध्यम से उत्पन्न होने वाली संभावनाओं, चुनौतियों व समस्याओं का अध्ययन एवं समीक्षात्मक विश्लेषण करना।

3) भारतीय शास्त्रीय संगीत के शिक्षण में ऑनलाइन माध्यम से उत्पन्न होने वाली समस्याओं के संभावित समाधान सुझाना।

अनुसंधान क्रियाविधिः-

यह शोध पत्र वैचारिक और खोजपूर्ण प्रकृति का है। इस प्रकार के शोध पत्र के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु माध्यमिक/द्वितीयक पद्धति को अपनाया जाता है। ऑनलाइन शिक्षा एवं शिक्षण से संबंधित माध्यमिक/द्वितीयक डाटा पुस्तकों, पत्रिकाओं, जर्नल और प्रकाशित सामग्री आदि ऑफलाईन व ऑनलाईन दोनों माध्यम से एकत्र किया गया।

ऑनलाइन शिक्षाः-

शिक्षाविदों के अनुसार ऑनलाइन शिक्षण, शिक्षण सेवाओं और प्रौद्योगिकी का एक अनूठा संयोजन है जिसके माध्यम से उच्च मूल्य की शिक्षा प्रदान की जा सकती है। ऑनलाइन शिक्षा की अवधारणा, प्रौद्योगिकी में नए नवाचारों और खोजों से भी प्रभावित तथा जन्य माना जाती है। वर्तमान में तो ऑनलाइन शिक्षा, प्रचलित शिक्षा प्रणालियों में प्रयोग किए जाने वाले माध्यम ब्लैकबोर्ड-चॉक, वाईटबोर्ड-मार्कर आदि का स्थान लेने लगी है, साथ ही साथ इसने शिक्षकों एवं विद्यार्थी के आभासी रूप से परस्पर उपस्थिति की अवधारणा को भी प्रस्तुत किया है।

'ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली (ई-लर्निंग) को सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक समर्थित शिक्षा और अध्यापन के रूप में परिभाषित किया जाता है, जो स्वाभाविक तौर पर क्रियात्मक होते हैं और जिनका उद्देश्य शिक्षार्थी के व्यक्तिगत अनुभव, अभ्यास और ज्ञान के सन्दर्भ में ज्ञान के निर्माण को प्रभावित करना है।'[2]

शिक्षाविद् ऑनलाइन शिक्षा को पूर्णतः इंटरनेट आधारित शिक्षा के रूप में परिभाषित करते हैं। "Online education is electronically supported learning that relies on the Internet for teacher/student interaction and the distribution of class materials."[3]

प्रौद्योगिकी के निरन्तर विकास एवं व्यापक पहुंच तथा इंटरनेट के विस्तृत एवं व्यापक स्वरूप के कारण वेब (ऑनलाइन) आधारित अध्ययन एवं अध्यापन की माँग में निरन्तर वृद्धि परिलक्षित हो रही है।

ऑनलाइन शिक्षा ऐसे सभी इच्छुक लोगों को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान करता है जो कहीं भी और कभी भी सीखने की ललक रखते हैं। शिक्षण की इस ऑनलाइन प्रणाली में इंटरनेट के माध्यम से शिक्षक एवं शिक्षार्थी आभासी रूप में आमने-सामने होते हैं तथा अध्ययन-अध्यापन या प्रशिक्षण की प्रक्रिया सम्मिलित होती है। "Online learning is a method of education whereby students learn in a fully virtual environment."[4]

कुछ शिक्षाविदों का मानना है कि मुक्त व दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के संयोजित माध्यम जैसे सीडी, डीवीडी आदि या उनके संयोजन (रिकार्डेड सामग्री) से भी ऑनलाइन/ई-शिक्षण संभव है। यह विधि न केवल विद्यार्थियों के लिए ही नहीं बल्कि शिक्षकों/प्रशिक्षकों तथा प्रशासकों के लिए भी उपयोगी प्रतीत हो रही है।

परम्परागत शिक्षा को सहयोग देने के उद्देश्य से ऑनलाईन/ई-लर्निंग का प्रारम्भ सन् 1980 के आसपास माना जाता है। उस समय इसमें अध्यापन के यांत्रिक प्रकार जैसे निर्देश एवं नियम ही विद्वानों द्वारा सम्मिलित माने गए। वर्ष 2004 में शिक्षाविद् एलिस ने बताया कि ऑनलाईन/ई-लर्निंग में दृश्य एवं श्रव्य सामग्री के माध्यम से प्रशिक्षण भी सम्मिलित किया जाना चाहिए। एलिस ने बताया कि क्योंकि ऑनलाईन शब्द के अर्थ में ही तकनीकी लक्षण (technological traits) समाहित है इसलिए ऑनलाईन अध्यापन एवं अध्ययन, केवल वेब आधारित उपकरणों के माध्यम से ही संभव है। एलिस ने अन्य शिक्षाविदों जैसे निकोलस (Nichols) आदि के मतों को नकार दिया था जो वेब को ऑनलाईन शिक्षण का हिस्सा नहीं मानते थे, एलिस का मत ऑनलाईन शिक्षण की प्रकृति के अनुसार सही भी प्रतीत होता है।

ऑनलाइन शिक्षा/ई-लर्निंग में अध्ययन-अध्यापन या प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु कुछ इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरणों की आवयकता होती है, जैसे कि 1) कंप्यूटर या मोबाइल कंप्यूटिंग डिवाइस जैसे नोटबुक, टैब या स्मार्ट मोबाइल फोन, 2) इंटरनेट/लोकल एरिया या वाइड एरिया नेटवर्क के अलावा कुछ संचार और दूरसंचार सपोर्ट, 3) माइक के रूप में कुछ मल्टीमीडिया समर्थन उपकरण, स्पीकर, 4) वीडियो कैमरा, एलसीडी प्रोजेक्टर, सीडीरोम/डीवीडी, लाइट पेन, स्मार्ट बोर्ड, आदि। इन उपकरणों के अतिरिक्त, ऑनलाइन शिक्षा/ई-लर्निंग हेतु कुछ गुणवत्तापूर्ण सॉफ्टवेयर्स व प्लेटफार्मस की भी आवश्यकता होती है जिस पर अध्ययन-अध्यापन किया जाता है।

मल्टीमीडिया, स्टिल ग्राफिक्स, मूविंग ग्राफिक्स, वीडियो, म्यूज़िक, टेक्स्ट, आदि जैसे कई लर्निंग टूल्स प्रभावी ऑनलाइन प्रणाली का अभिन्न अंग माने जाते हैं। ऑनलाइन शिक्षा/ई-शिक्षण हेतु कई सॉफ्टवेयर प्रोग्राम व प्लेटफार्मस भी विकसित किए गए

हैं और अन्य विकसित भी किए जा रहे हैं। उदाहरणार्थ ज़ूम, गूगल मीट, गूगल क्लासरूम, **Udemy, Teachable, WizIQ, Ruzuku, Educadium, LearnWorlds, Thinkific, Academy Of Mine, CourseCraft, Skillshare** आदि।[5]

भारत में ऑनलाइन माध्यम से अध्यय-अध्यापन के विकास एवं प्रचार-प्रसार के मुख्य निम्नलिखित कारण बताए गए हैं:-

- भारत में जनसंख्या का एक बड़ा भाग (लगभग एक अरब लोग) मोबाइल फोन का प्रयोग करते हैं तथा लगभग 200 मिलियन से अधिक इंटरनेट का प्रयोग करते है, जिसमें निरन्तर वृद्धि भी हो रही है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि भारत में ऑनलाइन माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने में बहुत वृद्धि हुई है।
- ऑनलाइन पद्धति का उद्देश्य पारम्परिक प्रणाली के कई बन्धनों को तोड़ना है जिस कारण से लोग गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने से वंचित हो जाते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो ऑनलाइन पद्धति गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने के लिए बन्धनरहित वातावरण प्रदान करती है।
- ऑनलाइन पद्धति की विशेषताओं जैसे उच्चकोटि की सामग्री का प्रयोग, व्यक्तिगत निर्देशों, वास्तविक क्षण अधिगम (Real Time Learning) और प्रतिपुष्टि (Feedback) विधियों आदि के कारण यह प्रचलित एवं लोकप्रिय हो रही है तथा इसके प्रयोग में भी वद्धि हुई है।
- एडुटेक(Edutech) जैसे कई ऑनलाइन फर्म लोगों को अपने ऑनलाइन कार्यक्रमों के माध्यम से कहीं भी-कभी भी सीखने का अवसर प्रदान कर रहे हैं। यह कार्यक्रम डिजिटल प्रारूप में उपलब्ध होते हैं तथा इनके लाईव एवं इंटरेक्टिव सत्र भी बहुत प्रभावी होते हैं।
- उक्त ऑनलाइन पाठ्यक्रम आसानी से उपलब्ध होते हैं तथा यह अपेक्षाकृत किफायती भी होते हैं।

ऑनलाइन माध्यम ने अपनी विशेषताओं के कारण अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया में बदलाव ला दिया है जिसका विवरण निम्नवत है:-

- ऑनलाइन पद्धति की मुख्य विशेषता लाईव एवं इंटरैक्टिव सत्र, विद्यार्थियों को यह सुविधा प्रदान करता है कि वे कभी भी और कहीं भी उत्कृष्ट एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त कर सकें।
- एडुटेक जैसे ऑनलाईन फर्म लाइव और इंटरैक्टिव डिजिटल लर्निंग के माध्यम से बच्चों से लेकर बड़ों तक को विशिष्ट तथा व्यापक शिक्षा प्रदान कर रही हैं जिससे उनके भीतर किसी उद्देश्य के साथ सीखने तथा स्वयं पर विश्वास की भावना पैदा हो सके।
- यह विद्यार्थियों को शिक्षा एवं करियर के विभिन्न घटकों संबंधित ज्ञान प्राप्त करने एवं मूल्यांकन हेतु एक ऐसा मंच प्रदान करती है जो अन्य प्रणालियों की अपेक्षा अधिक संवादात्मक और विद्यार्थी केन्द्रित है।
- निशुल्क ऑनलाइन पाठ्यक्रम छात्रों एवं शिक्षा प्रदाताओं दोनों के लिए नवीन मार्ग खोलते हैं। और जब लोग इसकी विशेषताओं तथा इसके परिणाम देखते हैं, तो वे ऑनलाइन माध्यम के प्रति अधिक आश्वस्त हो जाते हैं।
- यह विद्यार्थियों को अपने भविष्य संबंधित योजनाओं के निर्माण और अपने करियर में प्रोन्नति का अवसर प्रदान करती है।
- इस तरह हम देखते हैं कि भारत में ऑनलाइन माध्यम, विद्यार्थियों के सीखने एवं शिक्षकों के सिखाने के प्रकारों को परिवर्तित कर रही है।

ऑनलाईन माध्यम से भारतीय संगीत का शिक्षण:-

विगत कुछ वर्षों से लगभग प्रत्येक क्षेत्र के साथ-साथ संगीत के क्षेत्र में भी ऑनलाइन माध्यम से शिक्षण प्रारम्भ हो चुका है। किन्तु वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व कोविड महामारी से ग्रसित है। इसके चलते गुरू-शिष्य प्रणाली तथा संस्थागत प्रणाली से संगीत शिक्षा प्रदान करते वाले संस्थान, विद्यार्थियों तक शिक्षा पहुंचाने में असमर्थ हैं। मुक्त एवं दूरस्थ संस्थान ऐसी स्थिति में संगीत विद्यार्थियों तक पहुंचने में सफल हुए। किन्तु इस प्रणाली एवं माध्यमों की भी अपनी सीमाएं हैं जिस कारण अध्ययन-अध्यापन बाधित सा हो गया था। ऐसे में ऑनलाइन माध्यम भारतीय शास्त्रीय संगीत के अध्ययन-अध्यापन हेतु संजीवनी रूप में उभरा है। अब तो स्थिति यह है कि चाहे गुरू-शिष्य प्रणाली हो या संस्थागत प्रणाली, दोनों में ही यह संगीत शिक्षा प्रदान करने का मुख्य माध्यम बनता जा रहा है तथा गुरू व शिष्य भी इस माध्यम से सहज रूप से जुड़ते जा रहे हैं।

विश्व के अन्य देशों में मुक्त एवं दूरस्थ प्रणाली तथा ऑनलाईन माध्यम से संगीत शिक्षण - विश्व के कई देशों की शिक्षण संस्थान हैं जो इच्छुक विद्यार्थियों को संगीत शिक्षा प्रदान कर रहें हैं, जो विभिन्न कारणों जैसे सामाजिक, भौगोलिक दूरी, आर्थिक रूप से कमजोर, उचित परिस्थिति के अभाव, संक्रमित महामारी से उत्पन्न स्थिति जैसे कोविड-19 आदि के कारण संगीत की शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते। साथ ही साथ यह संस्थान संगीत विषय में प्रमाण पत्र, डिग्री आदि पाठ्यक्रम मुक्त एवं दूरस्थ प्रणाली या ऑनलाईन के माध्यम से भी प्रदान करते हैं। ऐसे कुछ संस्थानों का विवरण निम्नलिखित है:-

1. बॉस्टॉन विश्वविद्यालय, 2. बर्कली विश्वविद्यालय, 3. स्टीफन एफ. आस्टिन राज्य विश्वविद्यालय, 4. यूनिवर्सिटी ऑफ हवाई एट मनोआ, 5. मैरी पेपर्ट स्कूल ऑफ म्यूज़िक संस्थान, 6. इण्डियाना विश्वविद्यालय, 7. जुड्सन कॉलेज, 8. वेंधम एकेडमी ऑफम्यूजिक, 9. वेलीसिटी राज्य विश्वविद्यालय(नोर्थ डाकोटा), 10. ओबर्न विश्वविद्यालय, 11. यूनिवर्सिटी ऑफ साउथर्न मिसिसिप्पी, 12. पोडन्ट ब्लेंक म्यूज़िक स्कूल, 13. यूनिवर्सिटी ऑफनॉर्थन लोबा, 14. यूनिवर्सिटी ऑफनॉर्थ टेक्सास, 15. वेस्ट टेक्सास ए.एण्ड.एम. यूनिवर्सिटी, 16. यूनिवर्सिटी ऑफ सॉउथर्न मैने, 17. ज्योर्जिआ पेरीमिटर कॉलेज।

भारत में मुक्त एवं दूरस्थ प्रणाली तथा ऑनलाईन माध्यम से संगीत शिक्षण –

भारत में ऐसे कई उच्च शिक्षण संस्थान हैं, जहां संगीत जैसे प्रयोगात्मक विषय की शिक्षा मुक्त एवं दूरस्थ प्रणाली के माध्यम से प्रदान की जाती है तथा कुछ तो ऑनलाइन विधि द्वारा भी प्रदान करने लगे हैं। इच्छुक विद्यार्थी उक्त उच्च शिक्षण संस्थान से संगीत विषय में सर्टिफिकेट, डिप्लोमा, स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के पाठ्यक्रम में प्रवेश ले सकता है। उनमें से कुछ संस्थान का विवरण निम्नवत है:–

- इन्स्टीट्यूट ऑफ कोरेस्पोन्डेन्स एजुकेशन, मद्रास विश्वविद्यालय चेन्नई।
- अन्नामलाई यूनिवर्सिटी, तमिलनाडू।
- रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय कोलकाता।
- केलिकर आर्ट्स कॉलेज, केरल।
- कलाई कावेरी कॉलेज ऑफ फाइन आर्टस, तिरूचुपल्ली।
- भारथीदसन विश्वविद्यालय, तमिलनाडू।
- सस्त्र विश्वविद्यालय, थंजावुर, तमिलनाडु।
- क्वीन मैरी कॉलेज, चैन्नई।
- भारथीयार यूनिवर्सिटी कोयम्बटूर, तमिलनाडू।
- बंगाल म्यूज़िक कॉलेज, कोलकाता।
- इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, दिल्ली।
- उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, उत्तराखण्ड। आदि

भारत में ही कई ऐसी कई बड़े एवं छोटे स्तर की संस्थाएं, अकादमी एवं वेबसाइट्स हैं जो भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं अन्य प्रकार के संगीत की शिक्षा प्रदान करने के लिए मुख्य रूप से ऑनलाइन माध्यम का ही प्रयोग कर रही हैं। इनके द्वारा इच्छुक विद्यार्थी घर बैठे ही इंटरनेट आधारित ऑनलाईन माध्यम द्वारा संगीत की विभिन्न विधाओं का ज्ञान प्राप्त कर सकता हैं। इनमें से कुछ का विवरण निम्नवत है:–

1. वाराणसी एकेडमी ऑफ इंडियन क्लासिकल म्यूज़िक; (Varanasi Academy of Indian Classical Music) – https://www.benaresmusicacademy.com/page-1

2. देवब्रत मिश्र अकादमी भारतीय शास्त्रीय संगीत (Deobrat Mishra Academy of Indian Classical Music) - https://deobratmishra.com/

3. दिव्य संगीत एकेडमी (Divya Indian Music Academy) http://www.divyamusic.com/, http://musicclassonline.in/, http://danceclassonline.in/

4. देशपाण्डे ऑनलाइन म्यूज़िक क्लास (Online Classes of Indian Vocal Music by Deshpande) https://dhanashrideshpande.com/online-classes/

5. स्कूल ऑफइंडियन म्यूज़िक ऑनलाइन (Online School of Indian Music) https://www.muzigal.com/?gclid=CjwKCAjwruSHBhAtEiwA_qCppmNvCJSvvNpq2HOMEFzRnmOc5nSJwJZdWUPBVTsI1zh5sj1vxUYT1hoCDqYQAvD_BwE

6. सरस्वती संगीत अकादमी(Saraswathi Music Academy)

स्रोत–उत्तराखण्ड़ मुक्त विष्वविद्यालय के संगीत, नृत्य एवं कला प्रदर्शन विभाग द्वारा जुलाई 2020 में वर्चूअल/ऑनलाईन माध्यम से आयोजित कार्यशाला में विषय विशेषज्ञों द्वारा प्रयोगात्मक एवं सैद्धान्तिक पक्ष पर दिए गए व्याख्यान के चित्र। https://uou.ac.in/announcement/2020/07/1431

https://www.piggyride.com/provider/saraswathi-music-academy

7. मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय (Madhya Pradesh Bhoj Open University) https://mpbou.edu.in/

8. अलागप्पा विश्वविद्यालय-मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण (Distance Education-BLSI-Alagappa University) - https://alagappauniversity.ac.in/modules/DDE/dde.php

9. भारतीय संगीत की राग अकादमी (Raga Academy of Indian Music) http://ragaacademy.org/

10. एम.एल.एन. संगीत एवं नृत्य अकादमी, हैदराबाद (MLN Academy of Music and Dance, Hyderabad)– https://in.linkedin.com/in/mln-academy-of-music-dance-9345285b

11.वाईब्रेशन संगीत अकादमी, अहमदाबाद (Vibration Academy of Music, Ahemdabad) http://www.vibrationmusic.in/#

12. स्वरभूमि संगीत अकादमी (Swarbhoomi Academy of Music, Tamilnadu) https://sam.org.in/

13. शंकर महादेवन एकेडमी (Shankar Mahadevan Academy of Online Music) https://www.shankarmahadevanacademy.com/

14. ए.आर.रहमान एकेडमी (A.R. Rehman Academy of Online Music)

15. गाल्क-कला, भाषा एवं संस्कृति की अकादमी (GAALC(Global Academy of Arts, language and Culture)–http://gaalc.com/&https://carnaticlessonsonline.com/

16. कल्पवृक्ष ऑनलाइन कॉलेज ऑफ आर्टस (Kalpavriksha Online College of Arts) https://www.rasikas.org/forums/viewtopic.php?t=21289

17. ऑनलाइन कर्नाटक संगीत पाठ-सराली (Carnatic Music Lessons Online by Sarali on Skype) - https://www.youtube.com/watch?v=gZgC4No679Q

18. अर्पण सोमा सरकार ऑनलाइन क्लास (ARAPANSoma Sarkar Online Music Classes) https://www.somasarkar.com/

19. मुम्बई विश्वविद्यालय- दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षण (University of Mumbai- Distance & Open Learning) - https://mu.ac.in/distance-open-learning

20. माधुरी दीक्षित ऑनलाइन क्लास (Madhuri Dixit Online Dance Classes) https://dancewithmadhuri.com/index.php

21. रीवा विश्वविद्यालय, बैंगलूरू (REVA University, Banglore) https://reva.edu.in/course/diploma-and-certificate-in-carnatic-music-vocal-(online/regular)

22. राहुल देशपाण्डे प्राईम क्लास Primeclass by Rahul Deshpandey Online - https://www.hindustantimes.com/pune-news/pune-musician-rahul-deshpande-s-classes-on-hindustani-vocals-go-online/story-veHjIM58u4IpiQKrGAcMLO.html

23. सरस्वती संगीत विद्यालय (Saraswati Music College) https://www.saraswatimusiccollege.org/

24. गंधर्व महाविद्यालय, पूना (GandharvaMahavidyalaya, Pune) https://www.gandharvapune.org/cms/Learn-Music-Online.aspx

25. हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत सीखे (Learn Hindustani Classical Singing) https://www.udemy.com/course/beginners-course-to-hindustani-vocal-music/

25. OctavesOnline https://www.octavesonline.com/

26. IPASSIO – Online Hindustani Music Lessons https://www.ipassio.com/hindustani-music-classes

27. सामवेदसंगीतअकादमी(Saamaveda Music Academy) https://www.saamavedamusicacademy.in/

28. musictheory.net

29. howtoplaypiano.ca – Furmanczyk Academy of Music

30. playbassnow.com – MarloweDK bass lesson

31. ultimateguitar.com

32. teoria.com

33. swarganga.org – Swar Ganga Music Foundation

34. raag.hindustani.com

35. surgyan.com

36. shadjamadhyam.com
37. tanarang.com
38. carnaticindia.com
39. allmusic.com
40. onlineriyaz.com
41. itcsra.org
42. chandrakantha.com
43. clilck4classical.com

गौरी जोग इंडियन डांस स्कूल नामक एक ऐसी चेरिटेबल संस्था (www.gaurijog.com) चलाती (www.gaurijog.com) हैं जो भारतीय संस्कृति की एक अनूठी कला कत्थक नृत्य को सिखाने एवं उसके प्रचार-प्रसार का कार्य करती है। यह विद्यालय इच्छुक एवं आर्थिक रूप से अक्षम विद्यार्थियों को नृत्य की शिक्षा निशुल्क भी प्रदान करता है। यह विद्यालय कत्थक नृत्य की शिक्षा ऑनलाइन विधि से भी प्रदान करता है। यह विद्यालय भारत तथा विश्व के कई देशों में नृत्य की कई प्रस्तुतियां दे चुका है, जिनमें से रामायाणा, झांसी की रानी, कृष्ण लीला, कत्थक यात्रा, शकुन्तला, ईस्ट मीट वेस्ट, फायर-द-फेयरीटेल, डांस फॉर औलम्पिक आदि प्रमुख हैं।

अत: उक्त के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वर्तमान में ऑनलाइन विधि से बहुत सी संस्थाएं संगीत की शिक्षा प्रदान कर रही हैं जो इस विधि की महत्ता को परिलक्षित करता है। अपनी विशेषताओं के कारण ऑनलाईन विधि संगीत की सभी विधाओं गायन, वादन एवं नृत्य में प्रचलित, प्रचारित एवं प्रसारित हो रही है। संगीत कला सीखने के इच्छुक विद्यार्थी ऑनलाईन कक्षाओं से भारतीय शास्त्रीय संगीत की शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। वर्तमान में इंटरनेट पर संगीत की विभिन्न विधाओं संबंधित कई ऑनलाइन कक्षाएं संचालित हैं जिनमें से कुछ का विवरण उदाहरणार्थ निम्नवत है:-

ऑनलाईन भारतीय शास्त्रीय गायन की कक्षाएं (Online Indian Classical Vocal Music Class) :–

1. https://www.sharda.org/vocal/
2. https://aacm.org/online-indian-music-classes-sitar-sarode-tabla-classical-indian-vocal-instruction-indian-music-lessons-online/
3. https://www.saamavedamusicacademy.in/
4. https://www.youtube.com/results?search_query=Online+Classical+Vocal+Music+Class

ऑनलाईन सितार की कक्षाएं (Online Sitar Class) :–

1. https://www.sharda.org/sitar-lessons/
2. https://www.cmuse.org/learn-sitar-lessons-online/
3. https://aacm.org/online-indian-music-classes-sitar-sarode-tabla-classical-indian-vocal-instruction-indian-music-lessons-online/
4. https://sitarlessonsonline.com/
5. https://www.youtube.com/results?search_query=Online+Sitar+Class

ऑनलाईन तबला की कक्षाएं (Online Tabla Class) :–

1. https://tablalessonsonline.com/Learn-how-to-play-Tabla-classes-online-India.html
2. https://www.youtube.com/watch?v=iUgePz1M6II&t=44s
3. https://www.youtube.com/watch?v=asx3wwdO178
4. https://www.theworldmusicfoundation.org/lessonsindia/?gclid=EAIaIQobChMIqdjDqeT58QIVSCUrCh1GvAIPEAMYAiAAEgINVfD_BwE
5. https://www.classcentral.com/course/swayam-fundamentals-of-percussion-tabla-14078
6. https://www.youtube.com/results?search_query=online+tabla+classes

ऑनलाईन शास्त्रीय नृत्य की कक्षाएं (Online Indian Classical Dance Class) :–

1. https://bridgeacademy.in/music/Courses/Diploma-in-Dance-Bharatanatyam.php?gclid=EAIaIQobChMIvtmXvez58QIVDRsrCh3WiA7yEAAYASAAEgKLbfD_BwE
2. https://sreejaya.in/online_class.php
3. https://www.learnkathakonline.com/beginners/modelclasses
4. http://www.sangeetvidhyalaya.com/Dance-Classes-Indian-Classical.html
5. http://www.danceclassonline.in/
6. https://www.youtube.com/results?search_query=Online+Indian+Classical+Dance+Class

ऑनलाइन माध्यम से भारतीय संगीत का शिक्षण के लाभ एवं संभावनाएं:-

ऑनलाइन माध्यम से भारतीय संगीत का शिक्षण के लाभ एवं संभावनाएं निम्न है:

1. इस विधि में पूर्णकालिक उपलब्धता रहती है तथा यह कोई भी, कहीं भी, कभी भी अवधारणा का समर्थन करती है। भारतीय संगीत के अध्ययन-अध्यापन के परिप्रेक्ष्य में देखें तो कोई भी संगीत सीखने का इच्छुक शिष्य किसी भी गुरू से तथा अपने सुविधा के किसी स्थान पर रहते हुए सीख सकता है जो गुरू-शिष्य प्रणाली तथा संस्थागत प्रणाली में संभव नहीं है।

2. विद्यार्थी के पास सदैव अपनी शिक्षा प्राप्त करने की इच्छाओं को पूर्ण करने हेतु कई वैकल्पिक संसाधन/माध्यम उपलब्ध होते हैं। भारतीय संगीत के अध्ययन-अध्यापन के परिप्रेक्ष्य में देखें तो कोई भी संगीत सीखने का इच्छुक शिष्य, जो पारम्परिक प्रणाली के माध्यम से विभिन्न कारणों जैसे उम्र, समय, आर्थिक आदि के चलते संगीत सीखने में सक्षम नहीं है वह भी ऑनलाईन माध्यम से संगीत सीख सकता है।

3. इस विधि में कई प्रकार के अतिरिक्त संसाधन/माध्यम जैसे वीडियो, ऑडियो, एनिमेशन, सिमुलेशन, ब्लॉग, विशेषज्ञों की सहायता आदि उपलब्ध होते हैं जिनसे विभिन्न अवधारणाओं को बेहतर स्पष्टता से समझा जा सकता है। भारतीय संगीत के अध्ययन-अध्यापन के परिप्रेक्ष्य में देखें तो ऑनलाईन माध्यम भारतीय शास्त्रीय संगीत की सूक्ष्मताओं एवं गूढ़ रहस्यों को समझने में सहायक सिद्ध हो सकता है यदि इसकी संसाधनों का सही रूप में प्रयोग किया जाए।

4. प्रत्येक विद्यार्थी की सीखने की गति भिन्न होती है, अत: वह ऑनलाइन माध्यम के द्वारा अपनी सुविधाजनक गति से सीखने के लिए स्वतन्त्र है। संगीत के क्षेत्र में भी प्रत्येक शिष्य की सीखने की गति भिन्न होती है, अत: ऑनलाईन माध्यम से संगीत सीखने वाला प्रत्येक शिष्य गुरू द्वारा सिखाए गए राग, ताल आदि को अपनी सीखने की गति के अनुसार सीखने और समझने के लिए स्वतन्त्र होता है।

5. विद्यार्थी ऑनलाइन विधि के माध्यम से अपने प्रश्नों पर शिक्षकों/विशेषज्ञों की त्वरित प्रतिक्रिया और समाधान प्राप्त करने में सक्षम होता है। भारतीय संगीत के अध्ययन-अध्यापन के परिप्रेक्ष्य में देखें तो शिष्य ऑनलाईन माध्यम से अपने गुरू से राग, ताल के संबंध में जो कुछ भी सीखता है उससे संबंधित प्रश्न उसी समय पूछ सकता है और गुरू शिष्य की जिज्ञासाओं को शान्त भी कर सकता है, यदि शिष्य कुछ गलती करे तो गुरू उसे सही भी करा सकता है।

6. ऑनलाइन विधि विद्यार्थियों को विभिन्न स्तरों पर उनकी प्रगति का मूल्यांकन करने हेतु एक तंत्र प्रदान करता है जो शीघ्रता से मूल्यांकन के परिणाम उपलब्ध कराता है। भारतीय शास्त्रीय संगीत के अध्ययन-अध्यापन के परिप्रेक्ष्य में देखें गुरू अपने शिष्य को जो भी राग, ताल आदि सिखाता है उसका मूल्यांकन शीघ्रता से कर पाता है कि उसने कितना सीखा, वह सही ढ़ंग से बजा पा रहा है या नहीं आदि।

7. इस विधि के माध्यम से समय के साथ-साथ पैसे की बचत भी होती है। भारतीय शास्त्रीय संगीत को ऑनलाइन माध्यम से सीखने में जो खर्चा(जैसे ट्यूषन शुल्क, गुरू के पास जाने-आने में खर्च, यदि शिष्य अपने घर से दूर गुरू के पास रह कर सीख रहा है तो अन्य खर्च आदि) होता है वह अन्य प्रणालियों की अपेक्षा कम होता है या नहीं होता है। इससे शिष्य कम खर्च में भी संगीत सीख पाता है। साथ ही गुरू के पास जाने-आने में जो समय लगता है वह भी बचता है।

8. इस विधि में शिक्षकों/विशेषज्ञों के साथ व्यक्तिगत वार्तालाप, विद्यार्थी के व्यक्तिगत स्तर पर विकास में बहुत प्रभावी होता है। भारतीय शास्त्रीय संगीत के अध्ययन-अध्यापन के परिप्रेक्ष्य में देखें तो गुरू-शिष्य प्रणाली की भांति ही ऑनलाइन माध्यम में भी गुरू व्यक्तिगत रूप से शिष्य को संगीत का ज्ञान देता है जिससे शिष्य के व्यक्तित्व का चुहुमुँखी विकास देखने को मिलता है।

ऑनलाईन माध्यम से भारतीय शास्त्रीय संगीत के अध्ययन-अध्यापन में आने वाली चुनौतियां व समस्याएं एवं उनके संभावित समाधानः-

ऑनलाईन माध्यम से भारतीय शास्त्रीय संगीत के अध्ययन-अध्यापन एवं पाठ्यक्रमों के संचालन एवं क्रियान्वयन से संबंधित कुछ चुनौतियाँ व समस्याएं परिलक्षित होती हैं। उक्त चुनौतियाँ व समस्याओं एवं उनके संभावित समाधान निम्नलिखित हैं:

1. संगीत जैसे क्षेत्र में पारम्परिक दृष्टिकोणों के कारण नई पद्धति व विधियों को अपनाने से कतराते हैं या कहें कि नई पद्धति व विधियों को अपनाने में बहुत समय लगता है। इस कारण ऑनलाईन माध्यम से संगीत का व्यापक स्तर पर अध्ययन एवं अध्यापन नहीं हो पाता और भारतीय शास्त्रीय संगीत जनमानस में अपेक्षाकृत कम प्रचलित एवं लोकप्रिय है।

समाधान - उक्त के सन्दर्भ हेतु सुझाव है कि सभी संगीत कलाकारों, गुरू एवं शिक्षकों को समय के साथ आने वाली प्रणालियों को

हृदय से अपनाना चाहिए और उसमें दक्ष होने का प्रयास भी करना चाहिए ताकि भारतीय शास्त्रीय संगीत जनमानस में अधिक प्रचलित एवं लोकप्रिय हो सके।

2. ऑनलाइन विधि में गुरू/शिक्षक एवं शिष्य के मध्य विभिन्न कारणों से गुरू-शिष्य प्रणाली सदृश्य सदैव संवाद स्थापित नहीं हो पाता है जिससे भारतीय शास्त्रीय संगीत का अध्ययन-अध्यापन की प्रक्रिया बाधित सी हो जाती है। इससे गुरू-शिष्य के संबंधों के मध्य तारतम्यता स्थापित नहीं हो पाती जो संगीत जैसे विषय के लिए एक आवश्यक एवं महत्वपूर्ण घटक है।

समाधान - ऑनलाइन विधि में गुरू एवं शिष्य दोनों को आपसी सामंजस्य बनाते हुए संवाद स्थापित करने का प्रयास करना चाहिए। ऐसा करने से भारतीय शास्त्रीय संगीत के अध्ययन-अध्यापन हेतु गुरू एवं शिष्य दोनों के मध्य गुरू-शिष्य प्रणाली सदृश्य उचित संबंध स्थापित हो सकेगा और दोनों सीना-ब-सीन (आभासी रूप में) शिक्षा संभव हो सकेगी।

3. संगीत के क्षेत्र में गुरू एवं शिष्य दोनों के पास स्वयं का कम्प्यूटर होना तथा इंटरनेट कनेक्शन होना भी एक बड़ी चुनौती माना जाता है। आर्थिक कारणों से गुरू एवं शिष्य दोनों के पास कंप्यूटर एवं इंटरनेट कनेक्शन न होने से ऑनलाईन माध्यम से संगीत की शिक्षा असंभव सी है।

समाधान - शोधार्थी का सुझाव है कि गुरू एवं शिष्य दोनों ऑनलाईन विधि हेतु आवश्यक उपकरण कम्प्यूटर के स्थान पर मोबाईल(स्मार्टफोन), टैब आदि उपकरण का प्रयोग कर सकते हैं। इंटरनेट के लिए ब्रॉडबैंड के स्थान पर टेलीकॉम कम्पनी के कम मूल्य वाले डाटा पैक का प्रयोग किया जा सकता है। जो उक्त संसाधनों को जुटाने में भी अपरिहार्य कारणों से सक्षम नहीं हैं वे किसी संस्थान या संस्था से ऑनलाईन शिक्षा हेतु गठजोड़ कर सकते हैं।

4. कुछ शिष्यों को हमेशा प्रेरित करने की आवश्यकता होती है, अत: ऑनलाईन विधि में ऐसे शिष्यों का संगीत सीखने में पिछड़ने का खतरा हमेशा बना रहता है।

समाधान - उक्त के सन्दर्भ हेतु सुझाव है कि गुरू एवं शिष्य दोनों को लगातार एवं निश्चित अंतराल पर आपस में संवाद स्थापित करने का प्रयास करना चाहिए, जिससे गुरू द्वारा शिष्य को हमेशा प्रेरित किया जा सके।

5. तकनीकी रूप से दक्षता न होने या तकनीक-प्रेमी न होने को भी एक चुनौती के रूप में देखा जाता है। संगीत के क्षेत्र में गुरू एवं शिष्य दोनों में ऑनलाईन शिक्षण हेतु प्रयोग में लाए जाने वाले उपकरणों(कम्प्यूटर आदि) को चलाने संबंधी दक्षता नहीं होगी तो ऑनलाईन शिक्षण प्रभावी नहीं हो सकता। इसके साथ ही गुरू के पास अपेक्षित तकनीकी कौशल का ज्ञान होना आवश्यक है जिससे वह शिष्य को सिखाए गए पाठ के प्रभावी परिणाम की प्राप्ति कर सके। ऑनलाईन सॉफ्टवेयर का प्रभावी रूप से संचालन, उसका तकनीकी रूप से प्रबंधन एवं प्रयोग भी सभी गुरू एवं शिष्यों के लिए संभव प्रतीत नहीं होता।

समाधान - उक्त के सन्दर्भ हेतु सुझाव है कि गुरू एवं शिष्य दोनों को ऑनलाईन विधि संबंधित तकनीकी, आवश्यक उपकरणों, ऑनलाईन सॉफ्टवेयर एवं उसके संचालन आदि का प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त करना चाहिए जिससे ऑनलाईन माध्यम से भारतीय शास्त्रीय संगीत का अध्ययन-अध्यापन प्रभावी रूप से हो सके।

6. ऑनलाईन प्रणाली में शिक्षण सामग्री को विकसित और कार्यान्वित करना पारम्परिक प्रणाली की अपेक्षा अधिक समय लगने वाली प्रक्रिया है। भारतीय शास्त्रीय संगीत के शिक्षण के परिप्रेक्ष्य में देखें तो गुरू, शिष्य को सीखाने के लिए जो भी सामग्री विकसित करेगा उसमें अधिक समय लगता है।

समाधान - उक्त के सन्दर्भ हेतु सुझाव है कि गुरू या संस्थान को ऑनलाईन प्रणाली में भारतीय शास्त्रीय संगीत की शिक्षण सामग्री को विकसित और कार्यान्वित करने हेतु अन्य संबंधित विशेषज्ञों की सहायता भी लेनी चाहिए। इससे सामग्री विकास में कम समय लगेगा और बचा समय शिक्षण हेतु प्रयोग किया जा सकेगा।

7. उचित या निरंतर इंटरनेट कनेक्टिविटी का न होना और इंटरनेट की कम गति, ऑनलाईन शिक्षा के लिए बहुत बड़ी चुनौती है। विशेषकर भारत जैसे विकासशील देशों में तथा ग्रामीण क्षेत्रों के परिप्रेक्ष्य में यह कठिन कार्य है जिसके कारण दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रमों के अन्तर्गत ऑनलाईन विधि से शिक्षण में बाधा उत्पन्न होती है। साथ ही ऑनलाईन अध्ययन-अध्यापन के लिए इंटरनेट-आधारित संसाधनों के व्यापक स्पेक्ट्रम व ऑनलाइन विधि से संबंधित बुनियादी ढांचे की आवश्यकता होती है जिससे ऑनलाइन विधि प्रभावी हो।

उचित या निरंतर इंटरनेट कनेक्टिविटी का न होना, इंटरनेट की कम गति तथा इंटरनेट-आधारित संसाधनों के व्यापक स्पेक्ट्रम व ऑनलाइन विधि से संबंधित बुनियादी ढांचे की अनुपलब्धता के कारण ऑनलाईन माध्यम से भारतीय शास्त्रीय संगीत का शिक्षण भी अप्रभावी एवं आधारहीन हो जाएगा। इंटरनेट एवं ऑनलाइन विधि से संबंधित विभिन्न घटकों की कमी एवं अनुपलब्धता के कारण गुरू संगीत के स्वर, ताल आदि का ज्ञान,

शिष्य तक नहीं पहुंचा सकेगा और न ही शिष्य गुरू द्वारा प्रदत्त ज्ञान को ग्रहण कर सकेगा।

समाधान - उक्त के सन्दर्भ हेतु सुझाव है कि गुरू या संस्थान एवं शिष्य को अपने अनावश्यक व्यय पर रोक लगा कर उसका उपयोग उचित और बेहतर इंटरनेट कनेक्टिविटी, इंटरनेट-आधारित संसाधनों के व्यापक स्पेक्ट्रम व ऑनलाइन विधि से संबंधित बुनियादी ढांचे के लिए करना चाहिए जिससे गुरू संगीत के स्वर, ताल आदि का ज्ञान, शिष्य तक पहुंचा सके और शिष्य भी गुरू द्वारा प्रदत्त ज्ञान को सही रूप में ग्रहण कर सकेगा।

8. भारतीय शास्त्रीय संगीत गुरू-शिष्य के परस्पर भावनात्मक संबंधों पर आधारित माना जाता है। ऑनलाईन विधि मानव स्पर्श रहित है इस कारण विद्वान मानते हैं कि ऑनलाईन विधि से गुरू-शिष्य के मध्य परस्पर भावनात्मक संबंध स्थापित नहीं हो पाता, जिसके फलस्वरूप भारतीय शास्त्रीय संगीत का अध्ययन-अध्यापन प्रभावी नहीं होता। साथ ही ऑनलाईन माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने वाले संगीत विद्यार्थी के साथ ऐसी संभावना बहुत कम है कि वह शायद ही कभी गुरू से सीना-ब-सीन संगीत शिक्षा प्राप्त कर सके, जोकि संगीत जैसी गुरूमुखी विद्या के लिए अत्यन्त आवष्यक माना जाता है।

समाधान - उक्त के सन्दर्भ हेतु सुझाव है कि गुरू एवं शिष्य दोनों को आपसी सामंजस्य बनाते हुए आवश्यक रूप से निश्चित अन्तराल पर, भौतिक रूप में मिलते हुए संगीत के अध्ययन-अध्यापन का प्रयास करना चाहिए। इससे गुरू-शिष्य के मध्य परस्पर भावनात्मक संबंध स्थापित हो सकेगा, शिष्य सीन-ब-सीन संगीत शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे और भारतीय शास्त्रीय संगीत का अध्ययन-अध्यापन प्रभावी हो सकेगा।

9. ऑनलाईन माध्यम से भारतीय शास्त्रीय संगीत की शिक्षा प्राप्त करने वाले शिष्यों की प्रतिपुष्टि एवं मूल्यांकन स्वयं में एक गंभीर समस्या मानी जाती है। उक्त विद्यार्थी गुरू द्वारा सीखाए गए अमुक राग के आरोह-अवरोह, आलाप, रचना, तान, ताल, ताल संबंधी रचनाएं आदि को उचित रूप से सीख पाया है या नहीं, कितना सीख पाया है, उसका अभ्यास सही दिशा में है या नहीं आदि का मूल्यांकन ऑनलाईन माध्यम से करना सरल प्रतीत नहीं होता। विश्वविद्यालय या उस जैसे बड़े संस्थान तो एक बार को प्रतिपुष्टि एवं मूल्यांकन हेतु एक प्रणाली विकसित कर सकते हैं किन्तु अन्य प्रत्येक संस्थानों के लिए यह संभव प्रतीत नहीं होता।

समाधान - उक्त के सन्दर्भ में सुझाव है कि कुछ ऑनलाईन सत्र ऐसे रखने चाहिए जो केवल शिष्यों की प्रतिपुष्टि पर केन्द्रित हों। शिष्यों द्वारा संगीत में सीखे गए राग, ताल आदि का मूल्यांकन लाईव ऑनलाईन प्रदर्शन के आधार पर किया जा सकता है तथा प्रयोगात्मक परीक्षा व मौखिक परीक्षा भी ऑनलाईन मीटिंग प्लेटफार्मस पर लाईव आयोजित की जा सकती है। शिष्यों द्वारा संगीत में सीखे गए राग, ताल, उसके अभ्यास आदि का विडियो बना कर भी गुरू के पास भेजा जा सकता है जिसके आधार पर प्रतिपुष्टि एवं मूल्यांकन किया जा सके।

10. ऑनलाइन पाठ्यक्रम सामग्री के लिए राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय गुणवत्ता मानकों की अनुपलब्धता है। ऑनलाईन माध्यम से भारतीय शास्त्रीय संगीत के शिक्षण में भी गुणवत्ता संबंधी मानदण्ड निश्चित नहीं हैं जिस कारण देखने में आया है कि बहुत से ऐसे शिक्षक भी संगीत शिक्षा प्रदान कर रहें हैं जिनके पास स्तरीय सामग्री नहीं हैं और ऐसा उनकी आनलाईन कक्षा को देखने से पता चलता है।

समाधान - उक्त के सन्दर्भ में सुझाव है कि ऑनलाईन माध्यम से भारतीय शास्त्रीय संगीत के शिक्षण में गुणवत्ता संबंधी मानदण्ड राष्ट्रीय स्तर पर निश्चित किए जाने चाहिए। राष्ट्रीय स्तर पर स्तरीय संगीतकारों, शिक्षकों का एक समूह बनाया जाए और जिनका चयन भी राष्ट्रीय स्तर पर किया जाना चाहिए, जैसा कि आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के कलाकारों के चयन हेतु किया जाता है।

11. कई गुणवत्तापूर्ण ऑनलाइन पाठ्यक्रम की लागत बहुत अधिक होती है जिसे प्रत्येक विद्यार्थी वहन करने में असमर्थ होते हैं। ऑनलाईन माध्यम से भारतीय शास्त्रीय संगीत के गुणवत्तापूर्ण शिक्षण में भी लागत बहुत अधिक होती है जिसे संगीत सीखने का इच्छुक प्रत्येक शिष्य वहन नहीं कर सकता।

समाधान - उक्त के सन्दर्भ में सुझाव है कि अन्य शिक्षण प्रणालियों की भांति ऑनलाईन माध्यम से भारतीय शास्त्रीय संगीत के गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त हेतु छात्रवृत्ति का प्रावधान किया जाना चाहिए। छात्रवृत्ति प्रदान करने हेतु शिष्य का चयन राष्ट्रीय या राज्य स्तर पर किया जाना चाहिए।

12. ऑनलाइन शिक्षा से संबंधित कुछ मुद्दे हैं जैसे रोजगार के संदर्भ में ऑनलाइन पाठ्यक्रम की अल्प स्वीकार्यता, पारम्परिक पाठ्यक्रमों की अपेक्षा ऑनलाइन पाठ्यक्रम को कम महत्व देना आदि, के कारण भी ऑनलाइन माध्यम से सीखने के लिए प्रतिरोध पैदा होता है। ऑनलाईन माध्यम से भारतीय शास्त्रीय संगीत की शिक्षा प्राप्त करने वाले षिष्यों को उक्त समस्याओं से जूझना पड़ता है।

समाधान - उक्त के सन्दर्भ में सुझाव है कि केन्द्र एवं राज्य सरकारों को ऑनलाइन विधि के लिए नीतियां, नियम एवं विनियम

बनाने चाहिए जिससे इसकी स्वीकार्यता बढ़े और इसको पारम्परिक प्रणाली के समकक्ष ही महत्व दिया जाए। इससे विद्यार्थी ऑनलाइन माध्यम से भी भारतीय शास्त्रीय संगीत की शिक्षा प्राप्त करने को प्रेरित हो सकेगा।

13. कुछ विशेष प्रकार के पारम्परिक पाठ्यक्रमों को ऑनलाइन विधि के माध्यम से प्रस्तावित करना कठिनप्राय: सा है। भारतीय शास्त्रीय संगीत जैसे प्रयोगात्मक एवं गुरूमुखी विद्या को ऑनलाइन विधि से प्रदान करना बहुत कठिन कार्य है क्योंकि भारतीय शास्त्रीय संगीत की अपनी प्रकृति, परम्पराएं, नियम, सीखाने का तरीका आदि हैं और यह गुरू-शिष्य प्रणाली से ही सबसे प्रभावशाली रूप से संभव है ।

समाधान - उक्त के सन्दर्भ में सुझाव है कि संगीतकार एवं शिक्षक द्वारा भारतीय शास्त्रीय संगीत जैसे प्रयोगात्मक एवं गुरूमुखी विद्या, जिसकी अपनी प्रकृति, परम्पराएं, नियम, सीखाने का तरीके हैं, को गुरू-शिष्य प्रणाली की विशेषताओं के आधार पर ही प्रदान किया जाना चाहिए, केवल माध्यम के लिए आमने-सामने के स्थान पर ऑनलाइन का प्रयोग किया जाए।

निष्कर्ष-

आज के इस तकनीकी युग में भारतीय शास्त्रीय संगीत जैसे प्रयोगात्मक प्रकृति के विषय हो या कोई अन्य विषय, प्रत्येक में अध्ययन-अध्यापन संबंधी गतिविधियां हेतु मुख्यत: इंटरनेट अधारित ऑनलाईन माध्यम का प्रयोग आम बात हो गई है और इसके पीछे कारण यह माना जाता है कि यह अन्य उपलब्ध प्रणालियों की अपेक्षा सरल, सहज, कम खर्चीली, विद्यार्थी केन्द्रित, बन्धन रहित है।

कोविड-19 महामारी, प्राकृतिक आपदा जैसे समय में जिस प्रकार अन्य गतिविधियां के समान सभी शैक्षणिक गतिविधियां भी बंद सी हो गई थी, ऐसे में ऑनलाईन पद्धति ही वह माध्यम है जिसके कारण अध्ययन-अध्यापन की प्रक्रिया गतिमान रह सकती है और गुरू-शिष्य के मध्य संवाद स्थापित रह सकता है। केन्द्र एवं राज्य सरकारों को भी ऑनलाईन पद्धति के विकास में अपना पूर्ण सहयोग देना चाहिए एवं इंटरनेट संबंधी विभिन्न घटकों जैसे इसकी गति, उपकरण आदि हेतु प्रभावी नीति बनानी की भी नितान्त आवश्यकता है।

मुक्त एवं दूरस्थ संस्थान, अकादमियां, संगीत विद्यालय आदि भारतीय शास्त्रीय संगीत की ऑनलाईन माध्यम से शिक्षा एवं अध्ययन-अध्यापन का विकल्प प्रदान कर रहे हैं और इससे भारतीय शास्त्रीय संगीत जनमानस में और अधिक लोकप्रिय हो रहा है। जो संगीतज्ञ परम्परागत प्रणाली के अलावा अन्य प्रणालियों को अपनाने से कतराते थे या उनका विरोध करते थे वे भी ऑनलाईन माध्यम को अपनाते हुए संगीत शिक्षा प्रभावी रूप से प्रदान कर रहे हैं। संगीत विषय की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने एवं ग्रहण करने के लिए आवश्यक है ऑनलाईन पद्धति से संबंधित तकनीक, उपकरण आदि का अधिकतम प्रयोग एवं उनके संचालन में दक्ष बनना।

ऑनलाईन माध्यम से भारतीय शास्त्रीय संगीत का ज्ञान दिया जा सकता है किन्तु इस माध्यम में विशेष रूप से कुछ बातों पर ध्यान देना नितान्त आवश्यक है जैसे गुरू एवं शिष्य के मध्य अध्ययन-अध्यापन निरन्तर रूप में चलना चाहिए, गुरू द्वारा जो भी शिष्य को प्रयोगात्मक पक्ष जैसे राग, ताल आदि सीखाया जा रहा है वह उस तक सही रूप में पहुंचे, शिष्य उसका उचित रूप एवं प्रकार से अभ्यास करे, इसकी प्रतिपुष्टि गुरू, शिष्य से प्राप्त करे, शिष्य द्वारा सीखे गए राग व ताल का उचित मूल्यांकन रिकार्डेड तथा लाईव प्रदर्शन के आधार पर हो आदि। ऑनलाईन माध्यम एक प्रभावी माध्यम है बशर्ते इसका उपयोग पूर्ण कुशलता एवं दक्षता से किया जाए तथा इस माध्यम के अधिकतम उपयोग करने हेतु गुरू एवं शिष्य दोनों को कम्प्यूटर तथा तकनीक के प्रयोग व संचालन में दक्ष होना भी आवश्यक है। यह गुरू-शिष्य प्रणाली का स्थान नहीं ले सकती किन्तु विषम परिस्थितियों में गुरू एवं शिष्य के मध्य अध्ययन-अध्यापन हेतु गुरू-शिष्य प्रणाली के समान आभासी वातावरण उपलब्ध कराने में सक्षम है।

सन्दर्भ सूची:-

1. Gaikwad, Arun &Randhir, VrishaliSurndra (2016). E-Learning in India: Wheel of Change. International Journal of e-Education, e-Business, e-Management and e-Learning. P 43
2. https://hi.wikipedia.org/wiki/ई-शिक्षा
3. https://www.indiaeducation.net/online-education/articles/what-is-online-education.html
4. https://tophat.com/glossary/o/online-learning/
5. https://elearningindustry.com/elearning-platforms-use-online-courses-10

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. चौरसिया, ओम प्रकाश, संपा0, 2013, दूरस्थ संगीत शिक्षा, कनिष्का पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
2. शर्मा, स्वतन्त्र, 2010, सौन्दर्य, रस और संगीत, अनुभव पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद।
3. शर्मा, महारानी, 2011, संगीत मणि (भाग 2), श्री भुवनेश्वरी प्रकाशन, इलाहाबाद।
4. Goel, Aruna and Goel, S.L., 2009, Distance Education: Principles, Potentialities and Perspective, Deep & Deep Publications Pvt. Ltd., New Delhi.
5. Sharma, B.M., ed., 2009, Distance Education, Commonwealth Publishers, New Delhi.
6. Sharma, Madhulika, 2009, Distance Education: Concepts and Principles, Kanishka Publishers, Distributors, New Delhi.
7. Harichandan, Dhaneshwar, ed., 2009, Open And Distance Learning: Exploring New Frontiers & Developments, Himalaya Publishing House Pvt. Ltd., Mumbai.
8. Cite as: Sun, A., & Chen, X. (2016). Online education and its effective practice: A research review. *Journal of Infor-mation Technology Education: Research, 15,* 157-190. Retrieved from http://www.informingscience.org/Publications/3502
9. Dhawan, Shivangi(2020). Online Learning:A Panacea in the Timeof COVID-19 Crisis. Journal of Educational TechnologySystems. Vol. 49(1) 5–22. Retrieved from https://journals.sagepub.com/doi/full/10.1177/0047239520934018
10. Gaikwad, Arun &Randhir, VrishaliSurndra (2015). E-Learning in India: Wheel of Change. International Journal of e-Education, e-Business, e-Management and e-Learning. Vol. 40(6) Retrieved from http://www.ijeeee.org/vol6/390-4E201.pdf
11. Lone, Zahoor Ahmad (2017). Impact of Online Education in Indian. International Journal of Engineering Science and Computing, July 2017. Retrieved fromhttps://ijesc.org/upload/4e9a4612244093f84c7b9826de3f1d36.Impact%20of%20Online%20Education%20in%20Indian.pdf
12. Banerjee, Dr Mallika (2015). Seminar Proceedings-Emerging Trends And New Perspectives In The Teaching-Learning Practices In Performimg And Visual Arts, School Of Performing and Visual Arts, IGNOU, New Delhi.
13. Sood, Manu& Singh, Virender (2014). E – Learning: Usage among Indian Students. International Journal of Scientific & Engineering Research, Volume 5, Issue 4. Retrieved from https://www.ijser.org/paper/E-Learning-Usage-among-Indian-Students.html
14. Hebert, D G (2007). Five Challenges and Solutions in Online Music Teacher Education- Research and Issues in Music Teacher Education, Vol- 5.
15. Upadhyay, D., & Joshi, N. (2017). उच्च शिक्षा में दूरस्थ शिक्षण प्रणाली के माध्यम से भारतीय शास्त्रीय संगीत का शिक्षण:एक समीक्षात्मक विश्लेषण. *International Journal of Research -GRANTHAALAYAH*, *5*(2), 225–232.P 225-232
16. शर्मा, तरूणा (2015), भारतीय संगीत में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का महत्व एवं औचित्य, शोध-प्रबन्ध, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा।
17. www.mhrd.gov.in
18. www.ugc.ac.in
19. www.ignou.ac.in
20. www.uou.ac.in
21. www.col.org
22. www.ideunom.ac.in
23. www.kalaikaviri-dep.com
24. www.shadajmadhyam.com
25. www.bestindia.edu.com
26. www.musiced.about.com